

सूरह इन्शिकाक^[1] - 84

سُورَةُ الْاِنْشِقَاقِ

सूरह इन्शिकाक के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 25 आयतें हैं।

- इन्शिकाक का अर्थ: फटना है। इस में आकाश के फटने की सूचना दी गई है, इस कारण इस का यह नाम है।^[1]
- आयत 1 से 5 तक में उस उथल पुथल का संक्षेप में वर्णन है जो प्रलय आते ही इस धरती और आकाश में होगी।
- आयत 6 से 15 तक में मनुष्य के अल्लाह के न्यायालय में पहुँचने, कर्मपत्र दिये जाने और अपने परिणाम को पहुँचने का वर्णन है।
- आयत 16 से 20 तक विश्व की निशानियों से प्रमाणित किया गया है कि मनुष्य को मौत के पश्चात् विभिन्न स्थितियों से गुज़रना होगा।
- अन्तिम आयतों में उन्हें धमकी दी गई है जो कुर्आन सुनकर अल्लाह के आगे नहीं झुकते बल्कि उसे झुठलाते हैं। और उन्हें अनन्त प्रतिफल की शुभसूचना दी गई है जो ईमान ला कर सदाचार करते हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. जब आकाश फट जायेगा।
2. और अपने पालनहार की सुनेगा और यही उसे करना भी चाहिये।
3. तथा जब धरती फैला दी जायेगी।
4. और जो उसके भीतर है फैक देगी तथा खाली हो जायेगी।

إِذَا السَّمَاءُ انشَقَّتْ ۝
وَأَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحَقَّتْ ۝
وَإِذَا الْأَرْضُ مُدَّتْ ۝
وَأَلْقَتْ مَا فِيهَا وَتَخَلَّتْ ۝

1 इस सूरह का शीर्षक भी प्रलय (क्यामत) तथा परलोक (आखिरत) है।

5. और अपने पालनहार की सुनेगी और यही उसे करना भी चाहिये^[1]
6. हे इन्सान! वस्तुतः तू अपने पालनहार से मिलने के लिये परिश्रम कर रहा है, और तू उस से अवश्य मिलेगा।
7. फिर जिस किसी को उस का कर्म पत्र दाहिने हाथ में दिया जायेगा।
8. तो उस का सरल हिसाब लिया जायेगा।
9. तथा वह अपनों में प्रसन्न होकर वापस जायेगा।
10. और जिन को उन का कर्म पत्र बायें हाथ में दिया जायेगा
11. तो वह विनाश (मृत्यु) को पुकारेगा।
12. तथा नरक में जायेगा।
13. वह अपनों में प्रसन्न रहता था।
14. उस ने सोचा था कि कभी पलट कर नहीं आयेगा।
15. क्यों नहीं? निश्चय उस का पालनहार उसे देख रहा था^[2]

- وَأَذْنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ۝
يَا أَيُّهَا الْإِنْسَانُ إِنَّكَ كَادِحٌ إِلَىٰ رَبِّكَ كَدًّا
فَمُلَاقِيهِ ۝
فَأَمَّا مَنْ أُوْتِيَ كِتَابَهُ بِيَمِينِهِ ۝
فَسَوْفَ يُحَاسَبُ حِسَابًا يَسِيرًا ۝
وَيَنْقَلِبُ إِلَىٰ أَهْلِهِ مَسْرُورًا ۝
وَأَمَّا مَنْ أُوْتِيَ كِتَابَهُ وَرَاءَ ظَهْرِهِ ۝
فَسَوْفَ يَدْعُوا ثُبُورًا ۝
وَيَصْلَىٰ سَعِيرًا ۝
إِنَّهُ كَانَ فِي أَهْلِهِ مَسْرُورًا ۝
إِنَّهُ ظَنَّ أَنْ لَنْ يَخُورَ ۝
بَلَىٰ إِنَّ رَبَّهُ كَانَ بِهِ بَصِيرًا ۝

1 (1-5) इन आयतों में प्रलय के समय आकाश एवं धरती में जो हलचल होगी उस का चित्रण करते हुये यह बताया गया है कि इस विश्व के विधाता के आज्ञानुसार यह आकाश और धरती कार्यरत हैं और प्रलय के समय भी उसी की आज्ञा का पालन करेंगे।

धरती को फैलाने का अर्थ यह है कि पर्वत आदि खण्ड खण्ड हो कर समस्त भूमि चौरस कर दी जायेगी।

2 (6-15) इन आयतों में इन्सान को सावधान किया गया है कि तुझे भी अपने पालनहार से मिलना है। और धीरे धीरे उसी की ओर जा रहा है। वहाँ अपने

16. मैं सांध्य लालिमा की शपथ लेता हूँ!
17. तथा रात की, और जिसे वह ऐकत्र करे!
18. तथा चाँद की जब पूरा हो जाये।
19. फिर तुम अवश्य एक दशा से दूसरी दशा पर सवार होगे।
20. फिर क्यों वे विश्वास नहीं करते।
21. और जब उन के पास कुर्आन पढ़ा जाता है तो सज्दा नहीं करते।^[1]
22. बल्कि काफिर तो उसे झुठलाते हैं।
23. और अल्लाह उन के विचारों को भलि भाँति जानता है।
24. अतः उन्हें दुख दायी यातना की शुभ सूचना सुना दो।
25. परन्तु जो ईमान लाये तथा सदाचार किये उन के लिये समाप्त न होने वाला बदला है।^[2]

- فَلَا أَفْسَرُ بِالشَّقِيقِ ۝
وَالْأَيْلِ وَمَا أَوْسَىٰ ۝
وَالْقَمَرِ إِذَا اتَّسَقَ ۝
لَتَرْكَبُنَّ طَبَقًا عَنْ طَبَقٍ ۝
فَمَا لَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝
وَإِذَا قُرِئَ عَلَيْهِمُ الْقُرْآنُ لَا يَسْجُدُونَ ۝
بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا وَيَكْذِبُونَ ۝
وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يُوعُونَ ۝
فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ۝
إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ ۝

कर्मानुसार जिसे दायें हाथ में कर्म पत्र मिलेगा वह अपनों से प्रसन्न होकर मिलेगा। और जिस को बायें हाथ में कर्म पत्र दिया जायेगा तो वह विनाश को पुकारेगा। यह वही होगा जिस ने माया मोह में कुर्आन को नकार दिया था। और सोचा कि इस संसारिक जीवन के पश्चात् कोई जीवन नहीं आयेगा।

- 1 (16-21) इन आयतों में विश्व के कुछ लक्षणों को साक्ष्य स्वरूप प्रस्तुत कर के सावधान किया गया है कि जिस प्रकार यह विश्व तीन स्थितियों से गुजरता है इसी प्रकार तुम्हें भी तीन स्थितियों से गुजरना है: संसारिक जीवन, फिर मरण, फिर परलोक का स्थायी जीवन जिस का सुख दुःख संसारिक कर्मों के आधार पर होगा।
- 2 (22-25) इन आयतों में उन के लिये चेतावनी है जो इन स्वभाविक साक्ष्यों के होते हुये कुर्आन को न मानने पर अड़े हुये हैं। और उन के लिये शुभ सूचना है जो इसे मान कर विश्वास (ईमान) तथा सुकर्म की राह पर अग्रसर हैं।